

सामाजिक परिवर्तन में महिलाओं की भूमिका

¹डॉ. अमृत लाल जीनगर, ²डॉ. संजय परिहार

^{1,2}सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग, माधव विश्वविद्यालय, पिण्डवाड़ा (राजस्थान)

Article Info	ABSTRACT
Article History: Received: 15 th Dec 2025 Accepted: 18 th Dec 2025 Published: 20 th Dec 2025	भारत में महिलाएँ मानवीय समाज का लगभग आधा हिस्सा हैं। सामाजिक संरचनाओं, मूल्यों तथा विकास प्रक्रियाओं में महिलाओं की भागीदारी सामाजिक परिवर्तन की आधारशिला मानी जाती है। आज शिक्षा, राजनीति, अर्थव्यवस्था, स्वास्थ्य, तकनीक, आंदोलन, नीति-निर्माण, संस्कृति, परिवार एवं लैंगिक न्याय जैसे क्षेत्रों में महिलाओं द्वारा किए गए परिवर्तनकारी योगदान प्रशंसनीय है। सामाजिक बाधाओं, लैंगिक असमानताओं, पितृसत्तात्मक संरचनाओं तथा नीति-स्तरीय चुनौतियों में महिलाओं की भागीदारी महत्वपूर्ण रही है। महिलाओं की सशक्त भागीदारी के बिना कोई भी समाज गहन तथा टिकाऊ सामाजिक परिवर्तन प्राप्त नहीं कर सकता है। महिलाओं की शिक्षा, आर्थिक स्वतंत्रता, राजनीतिक प्रतिनिधित्व, डिजिटल सशक्तिकरण एवं सामाजिक आंदोलनों में भागीदारी का विस्तार ही भविष्य में अधिक समतामूलक और न्यायसंगत समाज का निर्माण करेगा। इस प्रकार सामाजिक परिवर्तन में महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण है।
Keywords: समाज, मानव, महिला, परिवर्तन	

Plagiarism Check Report:

Date of Report: Dec 17, 2025

Similarity Index: 2%

Remarks: No significant matching text. All citations and matches are properly referenced. The manuscript is considered original.

Copyright © 2025 The Author(s). This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License, (<http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/>) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.

How to Cite: Jeengar, A. L., & Parihar, S. (2025). सामाजिक परिवर्तन में महिलाओं की भूमिका. IIP: World Journal of Humanities and Social Sciences (IIPWJHSS), 1(IV), 693-697.

शोध पत्र :

सामाजिक परिवर्तन एक सार्वभौमिक एवं अनिवार्य प्रक्रिया है। मध्यकालीन समाज प्राचीनकाल से और आधुनिक समाज मध्यकालीन समाज से तुलनात्मक रूप से विश्वस्तर पर काफी भिन्न है। इसकी गति कभी समान नहीं रही है। एंथोनी गिडेन्स का कहना है कि “लगभग 18वीं सदी में सामाजिक परिवर्तन की गति मानव के इतिहास में सर्वाधिक तेज रही है। 20वीं शदी के उत्तरार्ध में सामाजिक परिवर्तन की गति कुछ और तेज हो गयी। विज्ञान और प्रौद्योगिकी की तरक्की ने सामाजिक परिवर्तन की गति को तेज करने में यह महत्वपूर्ण योगदान किया है।”

सामाजिक परिवर्तन, किसी समाज की संरचना, व्यवहार, संस्थाओं, मूल्यों, मान्यताओं तथा जीवनशैली में समय के साथ होने वाले स्थायी एवं महत्वपूर्ण बदलावों से है। यह परिवर्तन आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, तकनीकी, या वैचारिक रूपों में दिखाई दे सकता है। समाजशास्त्रियों के अनुसार, सामाजिक परिवर्तन एक निरंतर प्रक्रिया है और इसकी दिशा, गति तथा प्रभाव कई कारकों द्वारा निर्धारित होते हैं, जैसे कि शिक्षा, प्रौद्योगिकी, आंदोलन, नेतृत्व और सबसे प्रमुख मानवीय एजेंसी अर्थात् समाज के सदस्यों का सक्रिय योगदान।

महिलाएँ सदियों से समाज का अभिन्न हिस्सा रही हैं, परंतु उनके योगदान को लंबे समय तक ऐतिहासिक दस्तावेजों में कम आंका गया। पितृसत्तात्मक संरचनाओं ने महिलाओं की भूमिकाओं को सीमित किया, किंतु उन्होंने फिर भी परिवार, समुदाय, अर्थव्यवस्था और संस्कृति के स्तर पर महत्वपूर्ण परिवर्तन उत्पन्न किए। 19वीं और 20वीं शताब्दी में नारीवाद, महिला शिक्षा, महिला आंदोलनों और अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार ढाँचों ने महिलाओं की भूमिका को नए आयाम दिए।

भारत के संदर्भ में सामाजिक सुधार आंदोलन - जैसे राजा राममोहन राय, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, सावित्रीबाई फुले और महात्मा ज्योतिबा फुले के प्रयास महिला सशक्तिकरण के महत्वपूर्ण चरण रहे हैं। स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की उपस्थिति ने यह सिद्ध किया कि सामाजिक परिवर्तन की यात्रा में महिलाओं के बिना कोई राष्ट्रीय परिवर्तन संभव नहीं है।

सामाजिक परिवर्तन की परिभाषा और स्वरूप

सामाजिक परिवर्तन, समाज के आधारभूत परिवर्तनों पर प्रकाश डालने वाला एक विस्तृत एवं कठिन विषय है। इस प्रक्रिया में समाज की संरचना एवं कार्य-प्रणाली का एक नया जन्म होता है। इसके अन्तर्गत मूलतः प्रस्थिति, वर्ग, स्तर तथा व्यवहार के अनेकानेक प्रतिमान बनते एवं बिगड़ते हैं। समाज गतिशील है और समय के साथ परिवर्तन अवश्यंभावी है। विश्वस्तर पर सामाजिक परिवर्तन को विभिन्न विद्वानों ने अपने हिसाब से अलग-अलग दृष्टिकोणों से परिभाषित किया है।

मकाईवर एवं पेज ने अपनी पुस्तक ‘सोसायटी’ में सामाजिक परिवर्तन को स्पष्ट करते हुए बताया है कि “समाजशास्त्री होने के नाते हमारा प्रत्यक्ष संबंध सामाजिक संबंधों से है और उसमें आए हुए परिवर्तन को हम सामाजिक परिवर्तन कहेंगे।”

के डेविस के अनुसार “सामाजिक परिवर्तन का तात्पर्य सामाजिक संगठन अर्थात् समाज की संरचना एवं प्रकार्यों में परिवर्तन है।

एच. एम. जॉनसन ने सामाजिक परिवर्तन को बहुत ही संक्षिप्त एवं अर्थपूर्ण शब्दों में स्पष्ट करते हुए बताया कि मूल अर्थों में “सामाजिक परिवर्तन का अर्थ संरचनात्मक परिवर्तन है।”

सामाजिक परिवर्तन के लक्षण हैं :

सामाजिक परिवर्तन, यह एक सतत प्रक्रिया है, यह अवश्यंभावी है, इसकी गति कभी धीमी तो कभी तीव्र होती है, यह बहुआयामी और बहुस्तरीय है, यह मानव हस्तक्षेप तथा तकनीकी नवाचार दोनों से प्रभावित होता है। महिलाओं की भूमिका इन सभी स्तरों पर महत्वपूर्ण दिखाई देती है।

सामाजिक परिवर्तन के प्रकार :

सामाजिक परिवर्तन के निम्नलिखित सभी रूपों में महिलाओं की भूमिका अलग-अलग स्तरों पर प्रभावी रही है, जो इस प्रकार है -

- **निर्विकारी परिवर्तन** - जैसे मूल्य-व्यवस्था में बदलाव।
- **सुधारात्मक परिवर्तन** - जैसे कानूनों में संशोधन।
- **क्रांतिकारी परिवर्तन** - जैसे स्वतंत्रता आंदोलन में सामाजिक संरचना का पुनर्गठन।
- **विकासात्मक परिवर्तन** - जैसे आर्थिक सुधार, तकनीकी विकास।

सामाजिक परिवर्तन में महिलाओं की भूमिका :

सामाजिक परिवर्तन में महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। आज शिक्षा, बौद्धिक जागरूकता, राजनीति, अर्थव्यवस्था, कृषि, स्वास्थ्य, तकनीक, आंदोलन, नीति-निर्माण, संस्कृति, परिवार एवं लैंगिक न्याय जैसे विविध क्षेत्रों में महिलाओं द्वारा किए गए परिवर्तनकारी योगदान प्रशंसनीय है, जो इस प्रकार है -

1. शिक्षा और बौद्धिक जागरूकता में महिलाओं की भूमिका

शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का मूल आधार है। एक शिक्षित महिला न केवल स्वयं सशक्त होती है, बल्कि परिवार, समुदाय और समाज में ज्ञान एवं चेतना का प्रसार करती है। जैसे -

- **सावित्रीबाई फुले और महिला शिक्षा का आंदोलन** : भारत में आधुनिक महिला शिक्षा की शुरुआत सावित्रीबाई फुले के प्रयासों से मानी जाती है। उनके कार्यों ने समाज में परिवर्तन और स्त्री-शिक्षा दोनों को नई दिशा प्रदान की है।
- **शिक्षा का बहुप्रभाव** : सामाजिक परिवर्तन में शिक्षित महिलाओं के प्रमुख योगदान है, इससे महिलाओं की आत्मनिर्भरता बढ़ती है, बाल-विवाह, दहेज जैसी कुप्रथाएँ कम होती हैं, स्वास्थ्य संबंधी व्यवहार सुधरता है, बच्चों की बेहतर परवरिश और शिक्षा सुनिश्चित होती है, राजनीतिक जागरूकता और नेतृत्व क्षमता विकसित होती है।

2. आर्थिक क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका

आर्थिक विकास, सामाजिक परिवर्तन का सबसे प्रभावी स्रोत है। सामाजिक परिवर्तन में महिलाओं की आर्थिक भागीदारी बढ़ने से परिवार की आय, बच्चों का स्वास्थ्य, शिक्षा और सामाजिक गतिशीलता में वृद्धि होती है। जैसे -

- **कृषि और ग्रामीण अर्थव्यवस्था** : महिलाएँ लंबे समय से कृषि कार्य में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रही हैं। बीज चयन, पौधरोपण, फसल कटाई, दुग्ध उत्पादन आदि इन कार्यों में महिलाओं का योगदान अधिक होता है। 'सेल्फ हेल्प ग्रुप' ने ग्रामीण महिलाओं को आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाया है।
- **उद्यमिता** : आज अनेक महिलाएँ स्टार्टअप, उद्यमिता, ई-कॉमर्स और हस्तशिल्प को नया स्वरूप दे रही हैं। महिला उद्यमिता ने स्थानीय अर्थव्यवस्था और रोजगार सृजन में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।
- **औपचारिक क्षेत्र में भागीदारी** : शिक्षा और कौशल प्रशिक्षण के कारण महिलाएँ आई.टी., बैंकिंग, स्वास्थ्य, शिक्षा, सुरक्षा सेवाओं आदि में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

3. राजनीतिक क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका

राजनीतिक परिवर्तन सामाजिक परिवर्तन का प्रत्यक्ष प्रतिबिंब है। आज राजनीतिक क्षेत्र में भी महिलाएँ अपनी महत्वपूर्ण भूमिका बखूबी निभा रही हैं, जिससे राजनीति क्षेत्र में भी महिलाओं की रुचि बढ़ी है। जैसे -

- **ऐतिहासिक भूमिका** : स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी में सरोजिनी नायडू, अरुणा आसफ अली, कस्तूरबा गांधी, उषा मेहता आदि ने यह सिद्ध किया कि महिला नेतृत्व से राजनीतिक परिवर्तन संभव है।
- **समकालीन राजनीतिक भागीदारी** : पंचायती राज में 50% आरक्षण ने लाखों महिला नेताओं को जन्म दिया है। संसद एवं विधानसभा में महिलाओं की उपस्थिति सामाजिक नीतियों को अधिक समतामूलक दिशा देती है।
- **नीति-निर्माण में महिलाओं की दृष्टि** : आज महिलाएँ स्वास्थ्य, शिक्षा, पोषण, पर्यावरण और सामाजिक सुरक्षा से संबंधित नीतियों को अधिक संवेदनशील और प्रभावी बना रही हैं।

4. परिवार और समुदाय में महिलाओं की भूमिका

परिवार समाज की मूल इकाई है। परिवार से ही समुदाय का निर्माण होता है। सामाजिक परिवर्तन महिलाओं की भूमिका परिवार व समुदाय की इकाई के स्थायित्व, विकास और मूल्यों को नया आकार प्रदान करती है। जैसे -

- **सांस्कृतिक संरक्षण और मूल्य हस्तांतरण** : माता अपने बच्चों में अनुशासन, नैतिकता, सामाजिक व्यवहार, संस्कृति और भाषा का विकास करती है।
- **स्वास्थ्य और पोषण** : महिलाएँ परिवार के स्वास्थ्य, पोषण और स्वच्छता संबंधी व्यवहार को प्रभावित करती हैं। यह सामाजिक परिवर्तन का महत्वपूर्ण आधार है।

5. सामाजिक आंदोलनों में महिलाओं की भूमिका

सामाजिक आंदोलन महिलाओं की सबसे शक्तिशाली परिवर्तनकारी भूमिका मानी जाती है। सामाजिक परिवर्तन हेतु आंदोलनों के क्षेत्रों में महिलाओं द्वारा किए गए बलिदान, योगदान अति-प्रशंसनीय है। जैसे -

- **ऐतिहासिक आंदोलन** : चिपको आंदोलन (गौरा देवी), नर्मदा बचाओ आंदोलन (मीरा पाटकर), महिला मुक्ति आंदोलन आदि ने सामाजिक, पर्यावरणीय और राजनीतिक स्तर पर व्यापक परिवर्तन किए हैं।

- **महिला आंदोलन और नारीवादी चिंतन** : दूसरी और तीसरी लहर के नारीवादी आंदोलनों ने लैंगिक समानता, अधिकार, शिक्षा, रोजगार और यौन हिंसा आदि, जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर वैश्विक चेतना पैदा की है।

6. तकनीकी और डिजिटल परिवर्तन में महिलाओं की भूमिका

डिजिटल क्रांति ने महिलाओं की सामाजिक भूमिका को नया आयाम दिया है। आज महिलाओं ने तकनीकी युग में डिजिटल सशक्तिकरण का विस्तार कर भविष्य को अधिक समतामूलक, सरल व सुनहरा बनाया है। जैसे -

- **डिजिटल शिक्षा और कार्य** : आज महिलाएँ ऑनलाइन शिक्षा, ऑनलाइन व्यवसाय, डिजिटल बैंकिंग जैसे क्षेत्रों में सक्रिय भागीदारी कर रही हैं।
- **साइबर-एजेंसी** : आज सोशल मीडिया पर महिलाएँ सामाजिक अन्याय, भेदभाव, हिंसा और अधिकारों के मुद्दे उठाकर व्यापक परिवर्तन ला रही हैं।

7. स्वास्थ्य क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका

आज महिलाएँ आशा कार्यकर्ता, नर्स, चिकित्सक, स्वास्थ्य कार्यकर्ता की भूमिका में समाज के सबसे कमजोर वर्गों तक स्वास्थ्य सेवाओं को पहुँचाने में अहम योगदान दे रही हैं। स्वास्थ्य जागरूकता, परिवार नियोजन, मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य में महिलाएँ सामाजिक परिवर्तन की प्रमुख वाहक बन रही हैं। इस प्रकार महिलाएँ परिवार के स्वास्थ्य, पोषण और स्वच्छता संबंधी व्यवहार को प्रभावित कर स्वास्थ्य क्षेत्र में उनकी भूमिका को बताता है।

8. पर्यावरण संरक्षण में महिलाओं की भूमिका

पर्यावरणीय परिवर्तन का सामाजिक परिवर्तन से गहरा जुड़ाव है। महिलाएँ जल संरक्षण, जैव-विविधता, किचन गार्डन, स्वच्छ ऊर्जा उपयोग आदि के माध्यम से पर्यावरणीय जागरूकता को बढ़ावा दे रही हैं। आधुनिक समाज में महिलाओं की भूमिका काफी बदली है, जो न केवल सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक संदर्भ में महत्वपूर्ण है, बल्कि इसका संबंध उनके समृद्धि, स्वास्थ्य, शिक्षा, व्यक्तिगत विकास और समाज में समानता से भी है।

सामाजिक परिवर्तन में महिलाओं के समक्ष चुनौतियाँ

आज तकनीकी व डिजिटल युग में भी महिलाओं को अपने कार्यस्थल पर असमानता और दोहरी भूमिका के बोझ जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, लेकिन आर्थिक स्वतंत्रता और पहचान बनाने की उनकी इच्छा उन्हें आगे बढ़ाती है। वित्तीय समावेशन और डिजिटल सेवाओं में उनकी बढ़ती भागीदारी उन्हें सशक्त बना रही है, जिससे वे समाज में बड़े बदलाव ला रही हैं। संक्षेप में कहे तो, महिलाएँ समाज की नींव और विकास की धुरी हैं, जो परिवार से लेकर राष्ट्र तक प्रत्येक स्तर पर सकारात्मक बदलाव ला रही हैं। जैसे -

- **पितृसत्तात्मक संरचना** : लैंगिक असमानता समाज में महिलाओं की प्रगति की सबसे बड़ी बाधा व समस्या है।
- **शिक्षा एवं स्वास्थ्य** : ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी महिला शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं को लेकर कमी रहती है।
- **आर्थिक निर्भरता** : आर्थिक स्वतंत्रता के बिना सामाजिक निर्णयों में महिलाओं की भागीदारी सीमित रहती है।
- **राजनीतिक प्रतिनिधित्व** : उच्च-स्तरीय निर्णय लेने वाली संस्थाओं में महिलाओं की संख्या आज भी कम है।
- **हिंसा और भेदभाव** : घरेलू हिंसा, कार्यस्थल पर भेदभाव जैसे मुद्दे महिलाओं की सामाजिक भूमिका को प्रभावित करते हैं।

सामाजिक परिवर्तन से महिलाओं में सुधार व सशक्तिकरण

सामाजिक परिवर्तन से महिलाओं में विभिन्न सुधार हुए हैं, जिसके कारण समाज में आज उनका वर्चस्व है। सामाजिक परिवर्तनों में जैसे - शिक्षा में जागरूकता, कामकाज में समानता, राजनीतिक में सक्रियता, समाज में सम्मान आदि के कारण महिलाएँ आज स्वयं को सहज, सरल, सक्षम एवं सशक्त महसूस करती नजर आती हैं, वे सुधार इस प्रकार हैं -

- **शिक्षा में जागरूकता** : सामाजिक परिवर्तन से आज शिक्षित महिलाएँ न सिर्फ अपने जीवन में अधिक स्वतंत्र हैं, बल्कि अपने स्वतंत्र दृष्टिकोण के चलते समाज में अपनी पहचान बना रही हैं और सकारात्मक परिवर्तन लाने में मददगार साबित हो रही हैं। शिक्षित महिलाएँ न केवल अपने परिवार और समाज के लिए उपयुक्त भागीदार बनती हैं, बल्कि उन्हें अपने अधिकारों की भी अधिक जागरूकता होती है।
- **कामकाज में समानता** : सामाजिक परिवर्तन से महिलाओं को कामकाज में समानता मिली है। आज वे अधिकारिक रूप से सभी क्षेत्रों में चाहे वह मजदूरी हो, व्यवसाय हो, सरकारी क्षेत्र हो अथवा कोई मल्टीनेशनल कंपनी हो महिलाएँ तमाम जिम्मेदारियों

का निष्ठापूर्ण निर्वाह करके अपनी छाप छोड़ रही हैं। समाज में इस दिशा में हुई प्रगति ने महिलाओं के आत्मविश्वास और आत्मसम्मान को बढ़ाया है।

- **राजनीतिक में सक्रियता** : सामाजिक परिवर्तन से आधुनिक समाज में महिलाओं को राजनीतिक दलों और संस्थाओं में भी सक्रिय होने के अवसर प्राप्त हुए हैं। महिलाएँ राजनीतिक निर्णयों में भागीदारी से अपने अधिकारों की रक्षा करने लगी हैं और समाज के विकास में योगदान कर रही हैं।
- **समाज में सम्मान** : सामाजिक परिवर्तन से महिलाओं को समाज में उच्च स्थान और सम्मान मिला है, जिसकी वे हकदार हैं। वे न सिर्फ समाज में बल्कि अपने पारिवारिक दायित्वों का निर्वाह भी बखूबी कर रही हैं। उन्हें उनके संबंधित क्षेत्र में अधिक पदों और मार्गदर्शन की भी अधिक संभावना होनी चाहिए।

सामाजिक परिवर्तन का एक शक्तिशाली माध्यम : महिलाएँ

महिलाएँ, सामाजिक परिवर्तन का एक शक्तिशाली माध्यम हैं। महिलाएँ न केवल अपने जीवन में बल्कि अपने परिवार और समाज में भी जागरूक हैं और उनकी जागरूकता के चलते आज समाज में सकारात्मक बदलाव भी होने लगा है, क्योंकि वे अब बेहिचक बेहतर और समर्थ निर्णय लेने लगी हैं। इस प्रकार सामाजिक परिवर्तन हेतु आधुनिक समाज में महिलाओं की भूमिका निरंतर बढ़ रही है और उन्हें आगे बढ़ने और समाज में अपना स्थान बनाने का अवसर भी मिल रहा है। समाज के अलग-अलग क्षेत्रों में महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक दायित्वों को बढ़ाने से, समाज में समानता और न्याय का संचार होगा और समाज की समृद्धि बढ़ेगी और विकास सुनिश्चित होगा।

निष्कर्ष

महिलाएँ मानव समाज की आधारभूत महान शक्ति हैं। वे केवल परिवर्तन की सहभागी ही नहीं बल्कि परिवर्तन की सृजक, प्रेरक और वाहक भी हैं। सामाजिक परिवर्तन चाहे वह शिक्षा में हो, अर्थव्यवस्था में हो, राजनीति में हो, पर्यावरण में हो, स्वास्थ्य में हो या फिर संस्कृति में हो महिलाओं के बिना अधूरा ही है।

एक प्रसिद्ध भारतीय अर्थशास्त्री और दार्शनिक अमर्त्य सेन तथा अमेरिकी दार्शनिक और शिकागो विश्वविद्यालय के विशिष्ट सेवा प्राध्यापक मार्था नुसबौम ने कहा है कि “महिलाओं का सशक्तिकरण किसी भी समाज के विकास की नींव है। इसलिए, भविष्य का समाज तभी अधिक न्यायपूर्ण, समानतामूलक और मानवीय बन सकेगा, जब महिलाओं को सामाजिक परिवर्तन के सभी स्तरों पर समान एवं सार्थक अवसर मिलेंगे।”

आज सामाजिक परिवर्तन में महिलाओं की भूमिका बहुआयामी है, वे शिक्षा, स्वास्थ्य, अर्थव्यवस्था, राजनीति आदि विविध क्षेत्रों में अपना सक्रिय योगदान दे रही हैं। महिलाएँ पारंपरिक पारिवारिक भूमिकाओं से आगे बढ़कर समाज की प्रगति और विकास की प्रेरक शक्ति बनी हैं, जैसे कि स्वतंत्रता संग्राम, स्वयं सहायता समूह और नेतृत्व के पदों पर उनकी भागीदारी से साबित होता है कि, जो उन्हें सामाजिक बदलाव के प्रमुख एजेंट बनाती हैं। इस प्रकार संक्षिप्त रूप में कह सकते हैं कि सामाजिक परिवर्तन में महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण एवं बहुआयामी रही है।

संदर्भ सूची :

1. अग्रवाल, डॉ. भरत एवं मुखर्जी, डॉ. रविन्द्र नाथ (2025), भारत में समाज संरचना एवं परिवर्तन, आगरा : एसबीपीडी पब्लिकेशन।
2. गुप्ता, डॉ. आशीष एवं डेहरिया, डॉ. साधना (2020), भारतीय समाज में महिलाओं का बदलता हुआ परिदृश्य, चैन्नई : नोशन प्रेस।
3. कुरेशी, बिलाल (2025), महिलाओं के अधिकार और सामाजिक परिवर्तन, दिल्ली : स्टार एजुकेशनल बुक।
4. केशरवानी, प्रदीप कुमार (2018), भारतीय समाज में महिलाओं की बदलती हुई स्थिति इलाहाबाद : संरचना प्रकाशन।
5. एनसीईआरटी (2024), नारी शक्ति वंदन (समाज के विकास में महिलाओं का योगदान), नई दिल्ली : एनसीईआरटी।
6. सिंह, जे.पी. (2000) सामाजिक परिवर्तन : स्वरूप एवं सिद्धान्त, नई दिल्ली : प्रिंटवेल आफ इंडिया लिमिटेड।
7. शर्मा, कविता (2019), सामाजिक परिवर्तन में महिलाओं की भूमिका, जयपुर : ज्ञान प्रकाशन।
8. यादव, डॉ. पूनम (2022), समाज, संस्कृति एवं सामाजिक परिवर्तन, नई दिल्ली : लक्ष्मी पब्लिकेशन।